कुष्ठरोगके मुख्य प्रकार : तुलना

असंक्रामक कुष्ठ	संक्रामक कुष्ठ
१. कुष्ठ का यह प्रकार कम रोगप्रतिरोधक शक्ती होनेवाले व्यक्ती को बाधित करता है। इसमें शरीर के अंतर्गत कुष्ठरोग का संक्रम्रण सिवीत होता है।	१. कुष्ठ के इस प्रकार में रोगप्रतिरोधक शक्ती बिलकुल न होने से यह कुष्ठ शरीर में जादा फैलता है।
२.चक्ते चंद संख्या में होते है।	२. चक्ते संख्या में जादा होते है।
३. चक्ते संवेदनाक्षम और मोटे होते है।	३. चक्ते पतले, सफेद या तेजहीन चिकने या लालीमा वाले होते है। संवेदना जादातर पायी जाती है।
४. हातपैर की तंत्रिका को बाधा पहुँचनेसे उंगलिया अकडना और अन्य विकृती पैदा हो सकती है	४. विकृती का होना रोग के अंतिम अवस्थामें ही होता है।
५. चक्ते की सीमा स्पष्ट होती है।	५. चक्ते की सीमा अस्पष्ट होने से चक्ता और सामान्य त्वचा कहॉ शुरु कहॉ खत्म होती है ये कहना संभव नहीं।
६. चमडी का नमुना सूक्ष्मदर्शी से जॉचे तो जिवाणू दिखाई न देते।	६. चमडी का नमुना सूक्ष्मदर्शी से जॉचे तो जिवाणू दिखाई देते है।
७. सही इलाजसे जल्दी ठीक होता है।	७. इलाज जादा अवधी तक करना पडता है।